कूप निर्माण के पुण्यफल

-डॉ. अनुभूति चौहान

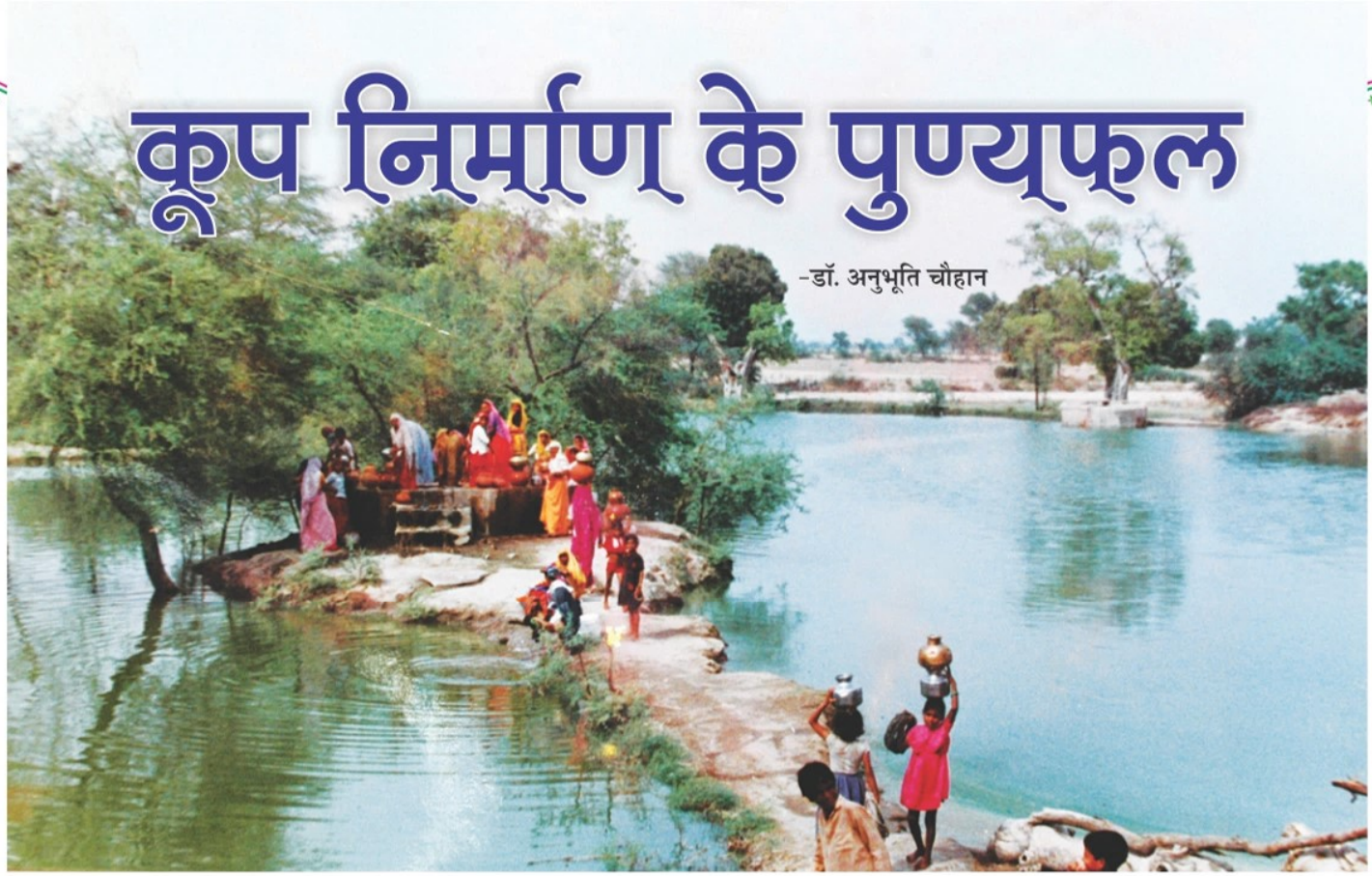

जलस्रोत का निर्माण बहुत पुण्य का कार्य माना गया है। अनेक शिलालेखों में जलस्रोतों के दीर्घायु और निरंतर जनसेवा के लिए तत्पर रहने की कामना की गई है। गुजरात, राजस्थान आदि में जलस्रोतों पर लगे जो शिलालेख मिले हैं, उनमें सागर की तरह स्रोत के चिरंजीवी रहने की मंगलकामना की गई है-

यावत् कूर्मधृता धरा विजयते यावत् भुद्भुजंगाधिपः पाताले पवमानपूरितनुर्या वद्दविश्चन्द्रः। तावत्तिष्ठतु तीर्थमेतदमलं वापी महामण्डपा साह श्रीसुरताणकेन विहितं मांगल्यपुष्टिप्रदम्।। (सादड़ी की ताराबाव का अभिलेख)

पुराण और स्मृतियों सहित वास्तुग्रन्थों में जलस्रोतों के निर्माण के फल, उनके उत्सर्ग, लोकहित में समर्पण आदि के विषय में विमर्श मिलता है। जलाशयतत्व नामक ग्रंथ में पुराण के वचन से कहा गया है कि जो सेतुबन्ध जैसे कार्य में लगे रहते हैं, जो तीर्थ शुद्धि के प्रति तत्पर होते हैं और जो तालाब, कूप को बनवाते हैं, वे सब प्यास के भय से मुक्त हो जाते हैं- सेतुबन्धरता ये च तीर्थशौचरताश्च ये। तडागकूपकर्तारो मुच्यन्ते ते तृषाभयात्।।

पुराण व स्मृतियों का मत

विष्णुस्मृति का मत है कि कूप खनन की प्रवृति रखने वाले दुष्कृत्यों से अलग रहते हैं। विष्णुधर्मोत्तर पुराणकार का मत है कि जो तालाब, कूप का निर्माण करवाते हैं, जो कन्यादान करते हैं और जो छत्र, जूते आदि का दान करते हैं, वे लोग पुण्यलोक को जाते हैं- तडागकूपकर्तारस्तथा कन्या प्रदायिनः। छत्रोपानह दातारस्ते नराः स्वर्गगामिनः॥ प्रकारान्तर से यही मत नन्दिकेश्वर पुराण में भी आया है और जिसको अनेक ग्रंथों में उद्धृत किया गया है- यो वापीमथवा कूपं देशे तोयविवर्जिते। खानयेत् स दिवं याति विन्दौ विन्दौ शतं समाः॥ नंदिकेश्वरपुराणकार का मत है कि जो व्यक्ति जलभाव वाले क्षेत्र में वापी अथवा कूप का निर्माण करवाता है, वह सौ-सौ स्वर्ग का लाभ प्राप्त करता है।

इसका आशय यह भी है कि जलस्रोत का निर्माण बहुत पुण्य का कार्य माना